Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 247-250

Received: 03-05-2025
Accepted: 13-06-2025
Published: 17-07-2025

बच्चों के सामाजिक विकास पर शैक्षिक संस्थानों और साथी समूह के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

[1]Aditi Chaturvedi and [2]Dr. Sarbesh Kumar Singh

[1]Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India
[2]Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19352484

Corresponding Author: Aditi Chaturvedi

सारांश

यह अध्ययन बच्चों के सामाजिक विकास पर शैक्षिक संस्थानों और साथी समूहों के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। बच्चों का सामाजिक विकास अनेक कारकों से प्रभावित होता है, जिनमें परिवार, विद्यालय तथा साथियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रारम्भिक अवस्था में परिवार बच्चे को सामाजिक मूल्यों, अनुशासन, सहयोग तथा नैतिकता की शिक्षा देता है, जबकि विद्यालय और साथी समूह उसके सामाजिक व्यवहार, संचार कौशल और आत्मविश्वास के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। इस अध्ययन में मिश्रित पद्धति का उपयोग किया गया, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के आँकड़ों को एकत्रित और विश्लेषित किया गया। अध्ययन की कुल लक्षित जनसंख्या 1300 थी, जिसमें से 297 उत्तरदाताओं का नमूना चुना गया। इसमें 201 किशोर, उनके अभिभावक तथा सामुदायिक नेता शामिल थे। डेटा संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली और साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया। साथ ही, सकारात्मक पारिवारिक वातावरण भी बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को सुदृढ़ बनाता है। इस प्रकार अध्ययन यह दर्शाता है कि बच्चों के संतुलित सामाजिक विकास के लिए परिवार, विद्यालय और साथी समूह के बीच समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

मूलशब्द: परिवार, साथी समूह; बच्चों का सामाजिक विकास, शैक्षिक संस्थानों

1. प्रस्तावना

परिवार वह संस्था है जहाँ एक बच्चा जन्म लेता है और इसलिए, बच्चे के समग्र विकास में इसका प्रभाव बहुत अधिक होता है, जैसा कि मनोविज्ञान के लगभग सभी विचारधाराओं द्वारा स्वीकार किया जाता है। परिवार एक सामाजिक संस्था है जो लगाव, देखभाल, सहायता, नियंत्रण और अनुशासन के बंधनों से मजबूती से जुड़ी हुई है। यह वह परिवार है जहाँ एक बच्चा अपनी मानसिक क्षमताओं का उपयोग करना सीखता है। परिवार की संरचना और कार्यप्रणाली में भिन्नताएँ होती हैं और तदनुसार यह भिन्नता बच्चे के दृष्टिकोण, रुचि और उपलब्धि में देखी जा सकती है। सकारात्मक पारिवारिक वातावरण यानी माता-पिता का समर्थन, माता-पिता का नियंत्रण, सहयोग आदि बच्चे के समुचित विकास और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि में योगदान देता है। दूसरी ओर, इसने यह भी दावा किया कि पारिवारिक वातावरण की विभिन्न संरचना जैसे खराब सामाजिक-आर्थिक स्थिति, भीड़भाड़ आदि बच्चे की उपलब्धि में बाधा बन सकती है और अन्य संबंधित कारकों ने पारिवारिक वातावरण के सामंजस्य, संघर्ष, संगठन और नियंत्रण आयाम का अध्ययन किया जो परिवार के संबंधों और गतिविधियों को मापता है और यह पता चला कि उल्लिखित आयाम बच्चे के संज्ञानात्मक विकास से संबंधित है।

एक अध्ययन से पता चला है कि परिवार की कार्यप्रणाली और परिवार की संरचना बच्चे के व्यवहार में महत्वपूर्ण योगदान देती है और बच्चे का व्यवहार परिवार की संरचना और कार्यप्रणाली के अनुसार बदलता रहता है। एक अध्ययन में पेरेंटिंग व्यवहार यानी गर्मजोशी, शत्रुता, निगरानी, माता-पिता की भागीदारी और पारिवारिक वातावरण की विशेषताओं यानी माता-पिता के रिश्ते की गुणवत्ता, सकारात्मक पारिवारिक मूल्य, मातृ और पितृ अवसाद आदि का परीक्षण किया गया और पाया गया कि

पारिवारिक वातावरण की विभिन्न विशेषताएं बच्चे के आत्म-सम्मान के विकास में सकारात्मक रूप से योगदान देती हैं।

एक अध्ययन से पता चलता है कि एक ही परिवार में भी, दो अलग-अलग बच्चों को दो अलग-अलग तरीकों से पाला जाता है और इस प्रकार इन दो अलग-अलग बच्चों के लिए पारिवारिक माहौल एक-दूसरे से भिन्न होता है। इससे पता चला है कि पालन-पोषण की शैली और निगरानी एक महत्वपूर्ण कारक है जो बच्चे के व्यवहार में योगदान देता है और ज्यादातर कारक जैसे उम्र, लिंग, परिवार की संरचना और पारिवारिक माहौल बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। साझा और सहयोगी पारिवारिक माहौल बच्चे के विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालता है और गैर-साझा पारिवारिक माहौल बच्चे के पारिवारिक माहौल पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। एक स्थिति है कि परिवार की संरचना, माता-पिता का समर्थन और देखभाल, मूल्य और दृष्टिकोण आदि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बच्चे के विकास और उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। व्यक्तिगत व्यक्तित्व में व्यक्तिगत अंतर पारिवारिक माहौल के कारण होता है।

2. साहित्य समीक्षा

रोस्टिंग, एर्ना. (2018) [1] परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो परिवार के मुखिया के निर्देशन में एक घर में एक साथ रहते हैं और रक्त संबंधों, विवाह या अन्य संबंधों के कारण एक बर्तन में भोजन साझा करते हैं। उनके अपने कर्तव्य हैं, वे एक-दूसरे के साथ जुड़ते हैं और एक संस्कृति की स्थापना और संरक्षण करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि परिवार प्राथमिक शैक्षिक इकाई के रूप में कार्य करता है और अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए सहयोग करता है। परिवार धार्मिक जीवन और नैतिक शिक्षा के लिए आधारशिला के रूप में कार्य करता है, जो बच्चों की शिक्षा में इसका प्राथमिक कार्य है। बच्चों के व्यक्तित्व पर ज्यादातर उनके माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों का प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति या बच्चे को उनकी पहली शिक्षा और देखरेख उनके परिवार में मिलती है, जिससे घर की सेटिंग प्राथमिक शैक्षिक सेटिंग बन जाती है। शिक्षा प्रदान करते समय बच्चों के विकास को ध्यान में रखा जाना चाहिए। बच्चे की वृद्धि की बढ़ती भावना के अनंत विकास के अलावा, बच्चे के विकास में कई निरंतर परिवर्तन भी शामिल हैं जो व्यक्ति के शारीरिक और आध्यात्मिक कार्यों से लेकर विकास, परिपक्वता और सीखने के माध्यम से परिपक्वता के चरण तक होते हैं।

बच्चों के शैक्षिक परिणाम उनके घरेलू वातावरण से काफी प्रभावित होते हैं। यह अध्ययन शैक्षणिक प्रदर्शन, संज्ञानात्मक विकास और सामाजिक-भावनात्मक क्षमताओं पर घरेलू भौतिक संसाधनों, भावनात्मक वातावरण, माता-पिता की भागीदारी और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभावों को देखता है। यह दृष्टिकोण इस बात पर जोर देता है कि पारिवारिक प्रभाव और शैक्षिक मार्ग कैसे परस्पर क्रिया करते हैं, जो अनुभवजन्य शोध और सैद्धांतिक रूपरेखाओं पर आधारित है। उदाहरण के लिए, कम आय वाले परिवारों के बच्चे अक्सर प्रौद्योगिकी और ट्यूशन तक सीमित पहुँच जैसी संस्थागत बाधाओं का सामना करते हैं, और माता-पिता की अत्यधिक व्यस्तता अनजाने में आंतरिक इच्छा को कम कर सकती है। इसके अलावा, बच्चों के तनाव के स्तर और कार्यकारी कामकाज को घर में भावनात्मक गतिशीलता द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जैसे कि माता-पिता की गर्मजोशी और विवाद समाधान, जो सीखने की क्षमताओं को और प्रभावित करता है। परिणाम असमान पारिवारिक स्थितियों, जैसे कि उचित संसाधन वितरण और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षण विधियों द्वारा लाई गई असमानताओं को कम करने के लिए व्यापक हस्तक्षेप की आवश्यकता को उजागर करते हैं।

मार्टिनेज यारज़ा, नेरिया और अन्य। (2024) [2]। एक कारक जो विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों में शैक्षणिक उपलब्धि और कल्याण में भिन्नताओं के लिए जिम्मेदार पाया गया है, वह है परिवार की भागीदारी। शैक्षणिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने से अक्सर छात्रों के गैर-शैक्षणिक परिणामों पर परिवार की भागीदारी के प्रभावों को अस्पष्ट किया जाता है। यह शोध सामाजिक-भावनात्मक विकास पर केंद्रित है, गैर-शैक्षणिक लक्षणों की एक श्रेणी जो अब स्कूल और उससे परे प्रबंधित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, यह अभी तक अज्ञात है कि क्या स्कूल की भागीदारी परिवार की भागीदारी और बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक विकास के बीच के रिश्ते में मध्यस्थ के रूप में कार्य कर सकती है। इस शोध का उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि क्या परिवार की भागीदारी किशोरों के सामाजिक-भावनात्मक विकास और स्कूल की भागीदारी से जुड़ी है, साथ ही इस संबंध के अंतर्निहित तंत्र को स्पष्ट करना है। 8 से 17 वर्ष की आयु के 170 किशोर और उनके माता-पिता जो सामाजिक रूप से बहिष्कृत हैं और आर्थिक रूप से अनिश्चित परिस्थितियों में रहते हैं, ने नमूना बनाया।

पेज़ा, इरमा. (2015) [3]. इस लेख में किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि पर साथियों और सामाजिक संपर्क के प्रभाव को संक्षेप में शामिल किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य दो अलग-अलग साथियों के रिश्तों, लगातार बातचीत और आपसी समूह सदस्यता, और शैक्षणिक प्रदर्शन के संदर्भ में सीखने के परिणामों में गिरावट या सुधार के बीच संबंधों के विश्लेषण में एक व्यक्तिगत योगदान प्रदान करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित शोध प्रश्न विकसित किया गया है: क्या साथियों के दबाव का 12 से 15 वर्ष की आयु के किशोरों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ता है? यह शोध पत्र शैक्षणिक उपलब्धि पर साथियों के दबाव के लाभ और हानि पर शोध के निकाय की समीक्षा करता है। तथ्यों, रिपोर्टों और टिप्पणियों से यह स्पष्ट है कि प्रभाव की प्रवृत्ति को समझना, सामाजिक प्रेरणा अनुसंधान से जुड़ना और साथियों के रिश्तों के प्रभाव को उचित रूप से अवधारणा बनाना आवश्यक है।

रुबिन, केनेथ एट अल. (2015) [4]. बच्चों की अपने साथियों के साथ बातचीत में ऐसी विशेषताएँ, प्रक्रियाएँ और परिणाम शामिल होते हैं जो कई सामाजिक जटिलता स्तरों को कवर करते हैं और अन्य विकासात्मक क्षेत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला को छूते हैं। विकास के विभिन्न क्षेत्रों की कई सैद्धांतिक व्याख्याएँ, जैसे कि पियागेट, सुलिवन, वायगोत्स्की, सामाजिक शिक्षण सिद्धांतकारों, नैतिकतावादों और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावादियों द्वारा प्रस्तुत की गई व्याख्याएँ, साथियों को शामिल करती हैं। साथियों के संबंधों के डेटा से पता चलता है कि बच्चों और किशोरों के अपने साथियों के साथ सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला हो सकती है। यह उन प्रक्रियाओं की विविधता को भी दर्शाता है जो बताती हैं कि साथियों का प्रभाव व्यवहार (जैसे, आक्रामकता), प्रभाव (जैसे, अवसाद, चिंता), स्कूल के प्रदर्शन, आत्म-धारणा, नैतिक दृष्टिकोण और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करता है। अध्याय कई घटनाओं के प्रभावों की जाँच करता है, जैसे कि दोस्ती, उत्पीड़न, लोकप्रियता, बहिष्कार, स्वीकृति और अस्वीकृति, और समूह के अनुभव। लिंग और संस्कृति के अनुसार प्रक्रियाओं और परिणामों में अंतर पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

3. अनुसंधान क्रियाविधि

3.1 अनुसंधान डिजाइन

इस अध्ययन में डिज़ाइन शोधकर्ता को एक निश्चित समय पर विभिन्न उत्तरदाताओं से डेटा एकत्र करने की अनुमति देता है। अध्ययन में मिश्रित पद्धति (Mixed Method Approach) का उपयोग किया गया जिसमें मात्रात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों प्रकार के डेटा को एकत्र और विश्लेषित किया गया। मात्रात्मक डेटा संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किशोरों से एकत्र किया गया, जबकि गुणात्मक डेटा माता-पिता और सामुदायिक नेताओं के साथ साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त किया गया। इस डिज़ाइन को इसलिए चुना गया क्योंकि यह पारिवारिक वातावरण और किशोरों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करता है।

3.2 अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन भारत में किया गया। भारत दक्षिण एशिया का एक प्रमुख देश है और जनसंख्या की दृष्टि से विश्व के सबसे बड़े देशों में से एक है। अध्ययन में विभिन्न परिवारों से संबंधित किशोरों, उनके माता-पिता तथा सामुदायिक नेताओं को शामिल किया गया ताकि पारिवारिक वातावरण और किशोरों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध का अध्ययन किया जा सके।

3.3 जनसंख्या: अध्ययन की जनसंख्या में किशोर, उनके माता-पिता और सामुदायिक नेता शामिल थे। अध्ययन की लक्षित जनसंख्या 1300 थी जिसमें निम्नलिखित समूह शामिल थे:

- किशोर– 880
- अभिभावक– 350
- सामुदायिक नेता– 70

यह जनसंख्या अध्ययन के उद्देश्य के अनुरूप चुनी गई थी क्योंकि ये सभी समूह किशोरों के पारिवारिक वातावरण और मनोवैज्ञानिक कल्याण को प्रभावित करते हैं।

3.4 नमूना आकार

अध्ययन में पूरी जनसंख्या से डेटा एकत्र करना समय और संसाधनों की सीमाओं के कारण संभव नहीं था। इसलिए अध्ययन के लिए जनसंख्या से एक उपयुक्त नमूना आकार निर्धारित किया गया। 1300 की लक्षित जनसंख्या से 297 उत्तरदाताओं का नमूना चुना गया।

4. डेटा विश्लेषण

4.1 उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय डेटा

इस अनुभाग में उत्तरदाताओं के रूप में किशोरों, माता-पिता और समुदाय के नेताओं की सामान्य पृष्ठभूमि की जानकारी दी गई है।

4.1.1 किशोरों का लिंग वितरण

उत्तरदाताओं के रूप में किशोरों के लिंग का पता लगाया गया और परिणाम तालिका 1 में दर्शाए गए हैं

तालिका 1: किशोरों का लिंग

उत्तरदाताओं का लिंग	आवृत्ति	वैध प्रतिशत
पुरुष	93	46.3
महिला	108	53.7
कुल	201	100.0

निष्कर्षों से पता चला कि उत्तरदाताओं में से अधिकांश 53.7% महिलाएँ थीं। पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या 46.3% थी, जो दर्शाता है कि दोनों लिंगों का उचित प्रतिनिधित्व था। इसका कारण यह हो सकता है कि महिलाएँ अपनी भूमिकाओं की प्रकृति के कारण अपना अधिकांश समय घर पर बिताती हैं, जबकि पुरुष अपना अधिकांश समय परिवार की माँगों को पूरा करने के लिए घर से बाहर बिताते हैं।

4.1.2 किशोरों का आयु वितरण

अध्ययन में भाग लेने वाले किशोरों को अपनी आयु सीमा बतानी थी। किशोरों के उत्तर तालिका 2 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 2: किशोरों की आयु

आयु वर्ग	आवृत्ति	वैध प्रतिशत
13-15 वर्ष	87	43.3
16-17 वर्ष	67	33.3
18-19 वर्ष	47	23.4
कुल	201	100.0

उपरोक्त तालिका 2 से पता चलता है कि किशोरों में से अधिकांश (N=87, 43.3%) 13-15 वर्ष के बीच के थे। किशोरों में से आधे से भी कम (N=67, 33.3%) 16-17 वर्ष के बीच के थे। किशोरों में से एक छोटा अनुपात (N=47, 23.4%) 18-19 वर्ष के बीच के थे। इसका अर्थ है कि इकाई विश्लेषण की श्रेणी 13-19 वर्ष के किशोरों के उचित विवरण में थी।

4.1.3 शिक्षा स्तर के अनुसार किशोरों का वितरण

यह खंड उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्तर को प्रस्तुत करता है। यह जानकारी इसलिए आवश्यक मानी गई क्योंकि इससे इस अध्ययन में भाग लेने वाले उत्तरदाताओं को वर्गीकृत करने में मदद मिली। परिणाम तालिका 3 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 3: शिक्षा स्तर के अनुसार किशोरों का वितरण

शिक्षा का स्तर	आवृत्ति	वैध प्रतिशत
प्राथमिक	81	40.3
माध्यमिक	94	46.8
तृतीयक	26	12.9
कुल	201	100.0

तालिका 3 से पता चलता है कि अधिकांश (N=94, 46.8%) और (N=81, 40.3) किशोर माध्यमिक और प्राथमिक स्तर पर हैं और किशोरों का बहुत छोटा अनुपात (N=26, 12.9%) तृतीयक स्तर पर था। इसलिए, यह दर्शाता है कि इस श्रेणी के अधिकांश उत्तरदाता माध्यमिक और प्राथमिक स्तर पर थे।

4.1.4 किशोरों के माता-पिता की वैवाहिक स्थिति का वितरण

यह खंड उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति प्रस्तुत करता है। यह जानकारी इसलिए आवश्यक मानी गई क्योंकि इससे इस अध्ययन में भाग लेने वाले उत्तरदाताओं को वर्गीकृत करने में मदद मिली। परिणाम तालिका 4 में प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 4: किशोरों के माता-पिता की वैवाहिक स्थिति का वितरण

वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	वैध प्रतिशत
विवाहित	153	76.1
तलाकशुदा	29	14.4
विधवा	19	9.5
कुल	201	100.0

तालिका 4 से पता चलता है कि किशोरों के अधिकांश माता-पिता (N=153, 76.1%) विवाहित थे। माता-पिता का एक छोटा हिस्सा तलाकशुदा (N=29, 14.4%) या विधवा (N=19, 9.5%) था।

4.2 किशोरों के मनोवैज्ञानिक

तालिका 5: किशोरों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर सारांश आँकड़े

वर्णनात्मक		आंकड़े	मानक त्रुटि
पारस्परिक मतलब		4.19	0.027
संबंध			
माध्य के लिए 95% विश्वास अंतराल	निचली सीमा	3.15	
	ऊपरी सीमा	3.45	
5% छंटनी माध्य		3.31	
मंझला		4.22	
झगड़ा		0.15	
मानक व्यतिक्रम		0.39	
न्यूनतम		3.04	
अधिकतम		5.00	
श्रेणी		1.96	
इंटरक्वार्टाइल रेंज		1.0	
तिरछापन		-0.56	0.17
कुकुदता		-0.25	0.34

तालिका 5 में परिणाम दर्शाते हैं कि माध्य = 4.19 माध्यिका = 4.22 के करीब था। इसलिए, नकारात्मक तिरछापन (तिरछापन = -0.56) के बावजूद, परिणाम सामान्य रूप से वितरित किए गए थे। चार के करीब माध्य और माध्यिका ने सुझाव दिया कि किशोरों का मनोवैज्ञानिक कल्याण उच्च था क्योंकि इस्तेमाल किए गए पैमाने के आधार पर, चार ने सहमति (उच्च) का प्रतिनिधित्व किया। निम्न मानक विचलन = 0.39 ने प्रतिक्रियाओं में कम फैलाव का सुझाव दिया।

5. निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि बच्चों के सामाजिक विकास में शैक्षिक संस्थानों और साथी समूहों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यालय बच्चों को न केवल औपचारिक शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि सामाजिक कौशल, अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व और सामूहिक कार्य की भावना भी विकसित करते हैं। वहीं साथी समूह बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक अनुकूलन और आत्म-अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथियों के साथ निरंतर संवाद और सहभागिता के माध्यम से बच्चे सामाजिक नियमों को समझते हैं तथा अपने व्यवहार को परिस्थितियों के अनुरूप ढालना सीखते हैं। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि सकारात्मक और सहयोगात्मक पारिवारिक वातावरण बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को मजबूत बनाता है। जिन बच्चों को परिवार से सहयोग, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन मिलता है, वे विद्यालय और साथी समूहों के साथ बेहतर समायोजन स्थापित कर पाते हैं। इसके विपरीत, असहयोगी या तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित कर सकता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बच्चों के समग्र सामाजिक विकास के लिए परिवार, विद्यालय और साथी समूहों के बीच संतुलित और सहयोगात्मक संबंध आवश्यक हैं। शिक्षकों, अभिभावकों और समाज को मिलकर ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जो बच्चों के स्वस्थ सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करे।

6. संदर्भ

1. रोस्टिंग ए. बच्चों के विकास पर परिवार का प्रभाव. प्राइमरीएडु – जर्नल ऑफ प्राइमरी एजुकेशन. 2018;2(1). doi:10.22460/pej.v1i1.654।
2. मार्टिनेज यारज़ा एन, सोलाबारिएटा-इज़ागुइरे जे, सैंटिबानेज़-ग्रुबर आर. छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक विकास पर परिवार की भागीदारी का प्रभाव: स्कूल की भागीदारी की मध्यस्थ भूमिका. शिक्षा के मनोविज्ञान का यूरोपीय जर्नल. 2024;39:1–31. doi:10.1007/s10212-024-00862-1।
3. पेज़ा इ. किशोरों में शैक्षणिक प्रक्रिया में सहकर्मी संबंधों का प्रभाव. मेडिटेरेनियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज. 2015;6:127–132. doi:10.5901/mjss.2015.v6n1s1p127।
4. रुबिन के, बुकोव्स्की डब्ल्यू, बोकर जे. सहकर्मी समूहों में बच्चे. 2015. doi:10.1002/9781118963418.childpsy405।
5. झाओ एल, झाओ डब्ल्यू. किशोरों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव: साथियों के साथ बातचीत की गुणवत्ता और शैक्षिक अपेक्षा अंतर की भूमिका. फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी. 2022;13:911959. doi:10.3389/fpsyg.2022.911959।
6. लियू जे. हाई स्कूल के छात्रों में शैक्षणिक प्रदर्शन पर सहकर्मी संबंधों का प्रभाव. शिक्षा मनोविज्ञान और सार्वजनिक मीडिया में व्याख्यान नोट्स. 2023;13:136–144. doi:10.54254/2753-7048/13/20230870।
7. सिंह अ, वर्मा र. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के बीच सहकर्मी संबंध और समाजीकरण प्रक्रिया. 2021.
8. केलेट्सोसिट्से ओ. बोर्डिंग स्कूल में छात्र व्यवहार और शैक्षणिक प्रदर्शन पर साथियों के प्रभाव का मूल्यांकन: बोत्सवाना के उत्तरी क्षेत्र में एक निजी स्कूल का केस स्टडी. 2021;10:63–73.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.